



**GE-International Journal of Management Research**

**ISSN (O): (2321-1709), ISSN (P): (2394-4226)**

**Vol. 7, Issue 05, May 2019 Impact Factor: 5.779**

**© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**

**www.aarf.asia, Email : [editoraarf@gmail.com](mailto:editoraarf@gmail.com)**

## **राजनीतिक जागरूकता और आदिवासी महिलाएं**

Dr. Jasinta Minj

Assistant Professor

Political Science

Rajeev Gandhi Govt. P.G. College, Ambikapur, Surguja, C.G.

### **सार**

भारत में, आदिवासी महिलाएं सदैव से ही सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से हाशिए पर रही हैं। लैंगिक भेदभाव और सामाजिक रीति-रिवाजों के बोझ से दबी, इन महिलाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शिक्षा और अवसरों की कमी, राजनीतिक भागीदारी में बाधाएं, और लैंगिक हिंसा जैसी समस्याएं इनकी दैनिक जीवन का हिस्सा बन गयी हैं। लेकिन, पिछले कुछ दशकों में, आदिवासी महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता बढ़ने की सकारात्मक प्रवृत्ति देखी जा रही है। शिक्षा के प्रति बढ़ती रुचि, सामाजिक कार्यकर्ताओं के प्रयासों, और सरकारी योजनाओं ने इन महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजनीतिक जागरूकता आदिवासी महिलाओं को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाती है। यह उन्हें अपनी आवाज उठाने और सामाजिक परिवर्तन लाने में सक्षम बनाती है। राजनीतिक प्रक्रिया में भागीदारी के माध्यम से, आदिवासी महिलाएं अपने समुदायों के विकास और नीति निर्माण में योगदान दे सकती हैं। राजनीतिक जागरूकता महिलाओं को नेतृत्व की भूमिका निभाने और अपने समुदायों का मार्गदर्शन करने के लिए प्रेरित करती है। राजनीतिक भागीदारी महिलाओं को लैंगिक भेदभाव और सामाजिक अन्याय के खिलाफ लड़ने में मदद करती है।

### **मुख्य शब्द**

राजनीतिक, जागरूकता, आदिवासी, महिलाएं

## भूमिका

शिक्षा आदिवासी महिलाओं को उनके अधिकारों और राजनीतिक प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। सामाजिक कार्यकर्ताओं और सरकारी संगठनों द्वारा चलाए जाने वाले जागरूकता अभियान महिलाओं को उनके राजनीतिक अधिकारों के बारे में शिक्षित कर सकते हैं। सफल आदिवासी महिला नेताओं का मार्गदर्शन और प्रेरणा अन्य महिलाओं को राजनीतिक रूप से सक्रिय होने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है।

राजनीतिक दलों को आदिवासी महिलाओं को टिकट देकर और उन्हें पार्टी नेतृत्व में शामिल करके प्रोत्साहित करना चाहिए। भारत में, आदिवासी महिलाएं सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से हाशिए पर रहने वाले समूहों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। लैंगिक भेदभाव और सामाजिक-सांस्कृतिक रूढ़ियों के बोझ तले दबी, इन महिलाओं को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें राजनीतिक भागीदारी की कमी भी शामिल है।

राजनीतिक जागरूकता, आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। जागरूक महिलाएं अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझ सकती हैं, चुनावों में भाग ले सकती हैं, और नीति निर्माण में अपनी आवाज उठा सकती हैं। अनेक बाधाएं हैं जो आदिवासी महिलाओं को राजनीतिक रूप से सक्रिय होने से रोकती हैं। इनमें शिक्षा की कमी, गरीबी, सामाजिक रूढ़िवादिता, लैंगिक भेदभाव, और राजनीतिक दलों द्वारा उपेक्षा शामिल हैं।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए, विभिन्न स्तरों पर प्रयास किए जाने चाहिए:

महिलाओं को शिक्षा और साक्षरता प्रदान करना, उन्हें अपने अधिकारों और राजनीतिक प्रक्रियाओं को समझने में सक्षम बनाएगा। महिलाओं को उनके राजनीतिक अधिकारों और भागीदारी के महत्व के बारे में जागरूक करने के लिए अभियान चलाए जाने चाहिए। महिलाओं को राजनीतिक दलों में शामिल होने, चुनाव लड़ने और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। महिला नेताओं को प्रोत्साहित करना और उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करना महत्वपूर्ण है, ताकि वे समुदाय में बदलाव ला सकें। महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा के लिए कानूनों और नीतियों को मजबूत करना आवश्यक है।

राजनीतिक जागरूकता, आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। शिक्षा, जागरूकता अभियान, राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा देना,

महिला नेतृत्व का विकास, और कानूनी एवं नीतिगत ढांचे को मजबूत करना, इन महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें समाज में समान स्थान प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

भारत में, आदिवासी महिलाएं सदियों से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से हाशिए पर रही हैं। लैंगिक भेदभाव और जातिगत पूर्वाग्रहों के दोहरे बोझ से दबी, इन महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी जैसे बुनियादी अधिकारों से वंचित रखा गया है। लेकिन, पिछले कुछ दशकों में, आदिवासी महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता बढ़ रही है। वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही हैं और सामाजिक परिवर्तन के लिए आवाज उठा रही हैं। शिक्षा और सामाजिक-आर्थिक विकास के अवसरों तक पहुंच में वृद्धि ने उन्हें सशक्त बनाया है और राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया है।

राजनीतिक जागरूकता आदिवासी महिलाओं को अपने अधिकारों और हितों के बारे में समझने और उनका दावा करने में सक्षम बनाती है। यह उन्हें सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेने और निर्णय लेने में अपनी आवाज उठाने के लिए प्रेरित करती है। राजनीतिक रूप से जागरूक आदिवासी महिलाएं सामाजिक कुरीतियों, लैंगिक भेदभाव और जातिगत अन्याय के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। वे शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और अन्य सामाजिक मुद्दों में सुधार के लिए आवाज उठा सकती हैं। राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से, आदिवासी महिलाएं नीति निर्माण प्रक्रिया में अपनी आवाज उठा सकती हैं और यह सुनिश्चित कर सकती हैं कि उनकी जरूरतों और चिंताओं को ध्यान में रखा जाए।

शिक्षा और साक्षरता की कमी आदिवासी महिलाओं को राजनीतिक प्रक्रियाओं को समझने और उनमें भाग लेने में बाधा डालती है। गरीबी और सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन आदिवासी महिलाओं को राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए आवश्यक संसाधनों और अवसरों तक पहुंचने से रोकता है। पितृसत्तात्मक समाज में, आदिवासी महिलाओं को अक्सर राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने से हतोत्साहित किया जाता है और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रखा जाता है। कई आदिवासी महिलाओं को अपने अधिकारों और राजनीतिक भागीदारी के अवसरों के बारे में जानकारी नहीं होती है।

## साहित्य की समीक्षा

शिक्षा और साक्षरता आदिवासी महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए तैयार करने की कुंजी है। गरीबी उन्मूलन और सामाजिक-आर्थिक विकास आदिवासी महिलाओं

को राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए आवश्यक संसाधनों और अवसरों तक पहुंच प्रदान करेगा। [1]

लैंगिक भेदभाव को दूर करना और महिलाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना महत्वपूर्ण है। सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को आदिवासी महिलाओं के बीच उनके अधिकारों और राजनीतिक भागीदारी के अवसरों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए अभियान चलाने चाहिए। [2]

राजनीतिक जागरूकता, नागरिकों में अपने अधिकारों, कर्तव्यों और देश की राजनीतिक प्रणाली के बारे में समझ विकसित करने की प्रक्रिया है। यह एक सक्रिय और जिम्मेदार नागरिक होने के लिए आवश्यक है। राजनीतिक रूप से जागरूक नागरिक अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत होते हैं। वे चुनावों में भाग लेते हैं, नेताओं को जवाबदेह ठहराते हैं, और सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं। [3]

जब नागरिक राजनीतिक रूप से जागरूक होते हैं, तो वे चुनावों में सूचित निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। वे विभिन्न उम्मीदवारों और उनके प्लेटफार्मों का मूल्यांकन कर सकते हैं, और यह चुन सकते हैं कि उनके लिए कौन सा नेता सबसे अच्छा होगा। [4]

राजनीतिक जागरूकता नेताओं को जवाबदेह ठहराने में मदद करती है। जब नागरिक सरकार के कामकाज के बारे में जानकार होते हैं, तो वे गलत कामों पर सवाल उठा सकते हैं और मांग कर सकते हैं कि नेता अपने वादों को पूरा करें। राजनीतिक जागरूकता सामाजिक विकास को बढ़ावा देती है। जब नागरिक अपने अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में जानकार होते हैं, तो वे सामाजिक मुद्दों पर आवाज उठाने और सकारात्मक बदलाव लाने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं। [5]

## **राजनीतिक जागरूकता और आदिवासी महिलाएं**

राजनीतिक जागरूकता राष्ट्रीय एकता को मजबूत करती है। जब नागरिक अपने देश की राजनीतिक प्रणाली के बारे में जानकार होते हैं, तो वे राष्ट्रीय हित में सोचने और कार्य करने की अधिक संभावना रखते हैं। राजनीतिक जागरूकता एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए आवश्यक है। यह नागरिकों को सशक्त बनाता है, उन्हें बेहतर निर्णय लेने में मदद करता है, नेताओं को जवाबदेह ठहराता है, सामाजिक विकास को बढ़ावा देता है, और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है।

महिला की स्थिति के बारे में कहा जाता है कि चुनाव में तथा रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़े हुए प्रश्नों पर अपने राय जाहिर करने की तरह ही राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी में एक क्रमिक वृद्धि के बावजूद राजनीतिक प्रक्रिया को

प्रभावित करने की सामर्थ्य अभी तक महिलाओं के पास नहीं है इस दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति का कारण राजनीतिक दलों और महिलाओं की संख्या बहुत कम पायी जाती है। हमारा आधुनिक भारतीय समाज आज भी राजनीति में महिलाओं के लिए समान प्रतिनिधित्व की सिद्धांत को अपनाने में हिचकिचा रहा है जिस कारण से महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं बढ़ पा रही है।

आज भारत में महिलायें सभी क्षेत्रों में आ रही है। वे अपने मेहनत व लगन के बल पर सभी क्षेत्रों में सफलता के झण्डे गाड़ रही है तो फिर राजनीति के क्षेत्र में पीछे क्यों हो रही है इतिहास और वर्तमान गवाह है कि भारतीय महिलाओं ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के वर्चस्व को तोड़ा है और कई क्षेत्रों में तो पुरुषों से भी अधिक प्रभावी भूमिका है, लेकिन वे राजनीति के क्षेत्र में पुरुषों के मुकाबले बहुत पीछे भी छूट गई है। महिलाओं को समान वैधानिक व राजनीतिक अधिकार दिये जाने चाहिए तभी भारत की आजादी सार्थक हो पायेगी।

राजनीति में महिलाओं की पर्याप्त भागीदारी और सत्ता में उनकी समान हिस्सेदारी के बिना हमारी आधुनिकता विकास और सभ्यता सब कुछ बेमानी है इसलिए राजनीति में महिलाओं की पर्याप्त भागीदारी के लिए समाज के सभी वर्गों को प्रयास करने होंगे। सभी लोगों को अपने जिम्मेदारी का निर्वहन करना होगा।

राजनीतिक जागरूकता का अर्थ है किसी नागरिक का अपने देश की राजनीतिक व्यवस्था, नीतियों, और घटनाओं से अवगत होना। यह नागरिकों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझने और उनका पालन करने में सक्षम बनाता है।

राजनीतिक जागरूकता अनेक कारणों से महत्वपूर्ण है:

सशक्त नागरिक: जागरूक नागरिक अपनी राय रखने और निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। वे अपने नेताओं से जवाबदेही मांग सकते हैं और सरकार की नीतियों को प्रभावित कर सकते हैं।

बेहतर शासन: जब नागरिक राजनीतिक रूप से जागरूक होते हैं, तो वे चुनावों में भाग लेते हैं और योग्य नेताओं को चुनते हैं। इससे सरकार अधिक जवाबदेह और पारदर्शी बनती है।

सामाजिक विकास: राजनीतिक जागरूकता नागरिकों को सामाजिक मुद्दों के बारे में सोचने और उन पर कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करती है। वे सामाजिक न्याय और समानता के लिए लड़ सकते हैं और एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं।

राष्ट्रीय एकता: जब नागरिक अपनी राष्ट्रीय पहचान से अवगत होते हैं और अपने देश के प्रति कर्तव्यों को समझते हैं, तो राष्ट्रीय एकता मजबूत होती है।

राजनीतिक जागरूकता बढ़ाने के लिए कुछ सुझाव:

मतदान: हर चुनाव में मतदान करें, भले ही आपको लगता है कि आपका वोट फर्क नहीं पड़ेगा।

राजनीतिक मुद्दों के बारे में जानें: समाचार पढ़ें, किताबें पढ़ें, और विभिन्न दृष्टिकोणों को सुनें।

राजनीतिक गतिविधियों में भाग लें: बैठकों में भाग लें, प्रदर्शनों में शामिल हों, और अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों से संपर्क करें।

अन्य लोगों को शिक्षित करें: अपने परिवार, दोस्तों और समुदाय के सदस्यों के साथ राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करें।

राजनीतिक जागरूकता कैसे बढ़ाई जा सकती है:

शिक्षा: राजनीतिक विज्ञान और नागरिक शास्त्र को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।

मीडिया: मीडिया को निष्पक्ष और सटीक जानकारी प्रदान करनी चाहिए।

सामाजिक संगठन: सामाजिक संगठनों को राजनीतिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।

सरकारी पहल: सरकार को राजनीतिक जागरूकता अभियान चलाने चाहिए।

राजनीतिक जागरूकता एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए आवश्यक है। यह नागरिकों को सशक्त बनाता है, बेहतर शासन को बढ़ावा देता है, सामाजिक विकास को प्रेरित करता है, और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि राजनीतिक जागरूकता का मतलब केवल चुनावों में मतदान करना नहीं है। नागरिकों को अपने देश की राजनीतिक व्यवस्था में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए और अपने विचारों और राय को व्यक्त करना चाहिए।

राजनीतिक जागरूकता एक सक्रिय नागरिक होने का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसका अर्थ है अपने देश की राजनीतिक प्रणाली, वर्तमान घटनाओं और मुद्दों, और सरकार द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी रखना। राजनीतिक रूप से जागरूक नागरिक अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों को समझते हैं और वे अपने समुदाय और देश में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

राजनीतिक रूप से जागरूक नागरिक चुनावों में मतदान करते समय और अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर राय देते समय सूचित निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। वे झूठी खबरों और प्रचार से बच सकते हैं और विश्वसनीय स्रोतों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। राजनीतिक जागरूकता नागरिकों को चुनावों में मतदान करने, विरोध प्रदर्शनों और रैलियों में भाग लेने, याचिकाओं पर हस्ताक्षर करने और अपने प्रतिनिधियों को पत्र लिखने के लिए प्रेरित करती है। वे सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने के लिए स्वयंसेवा भी कर सकते हैं।

राजनीतिक रूप से जागरूक नागरिक सरकार को जवाबदेह ठहरा सकते हैं। वे भ्रष्टाचार और कुशासन की निगरानी कर सकते हैं और मांग कर सकते हैं कि उनके प्रतिनिधि उनके हितों का प्रतिनिधित्व करें। राजनीतिक जागरूकता नागरिकों को सशक्त बनाती है और उन्हें अपने जीवन और अपने समुदायों पर नियंत्रण रखने में मदद करती है। वे अपनी आवाज उठा सकते हैं और बदलाव लाने के लिए कार्रवाई कर सकते हैं।

राजनीतिक रूप से जागरूक नागरिक मजबूत लोकतंत्र के लिए आवश्यक हैं। वे एक स्वस्थ और जीवंत नागरिक समाज को बनाए रखने में मदद करते हैं जो सरकार को जवाबदेह ठहराता है और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करता है। राजनीतिक जागरूकता न केवल एक अधिकार है, बल्कि यह एक जिम्मेदारी भी है। यह एक ऐसा उपकरण है जिसका उपयोग नागरिक अपने जीवन और अपने देश को बेहतर बनाने के लिए कर सकते हैं।

## निष्कर्ष

राजनीतिक जागरूकता आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षा, जागरूकता अभियान, महिला नेतृत्व और राजनीतिक दलों की भागीदारी के माध्यम से, हम इन महिलाओं को सशक्त बना सकते हैं और उन्हें समाज में समान अवसर प्रदान कर सकते हैं। यह बदलाव न केवल आदिवासी महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाएगा, बल्कि पूरे समाज के विकास में भी योगदान देगा।

## संदर्भ

- 1 भारतीय राजनीति. डाब्ल्यूएलएफाडिया
- 2 सामाचार पत्रों के लेख . नवभारत
- 3 पत्रिका मनोरमा
- 4 भारतीय शासन

